प्रातःक्लास 23.3.68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चों आत्म–अभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ अपन को आत्मा समझो। यह भी जानते हो परमात्मा एक है। ब्रह्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता। ब्रह्मा की तो 84 जन्मों की कहानी तुम जानते हो। यह है इनका अन्तिम जन्म तमोप्रधान। मुझे आना भी उसमें होता है जो सबसे जास्ती तमोप्रधान होता है। उनके ही शरीर में आता हूं जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनको ही बताता हूं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। मैं समझाता हूं पहले–2 तुम यह थे। एक को तो नहीं कहेंगे ना। यह तो डिनायस्टी है। अभी यह बनने लिए फिर से पुरुषार्थ करना पड़े। इतने शास्त्र आदि जो भी पढ़े हुये हो वह तो सभी हैं भक्तिमार्ग के। भक्ति करते सीढ़ी नीचे उतरनी होती है। पुनर्जन्म तो पहले जन्म से ही शुरू होता है। अभी बाप कहते हैं मैं जो तुमको सुनाता हूं वह राइट्स है। बाकी जो कुछ सुना है वह है रांग। मुझे कहते ही हैं ट्रुथ। सत्य बोलने वाला। वही सत्यधर्म की स्थापना करेंगे। कहते हैं '' सच्च तो बिठो नच''। अर्थात् डांस करो। खुशी में ही डांस होती है। यह है ज्ञान डांस। वह लोग फिर कृष्ण को दिखाते हैं। मुरली बजाना, रास आदि करना। वह तो हैं सच्च खण्ड के मालिक। इनको भी बनाने वाला कौन? वह है सच्च–खण्ड। यह है झूठ–खण्ड। भारत सच्चखण्ड था जबकि इनका राज्य था। और कोई खण्ड था नहीं। मनुष्य यह नहीं जानते स्वर्ग कहां है। कोई मरते तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। कितने जंगली बेवकूफ हैं। उल्लू ,पाज़ी हैं। बाप समझाते हैं तुम उल्लू बन उल्टा लटक पड़े हो। माया के आधीन हो पड़े हो। अभी तुमको बाप आकर सुल्टा बनाते हैं। भक्ति होती ही है नीचे गिरने लिए। बाप कहते हैं अभी भक्तिमार्ग का कोई भी अक्षर नहीं सुनो। हियर नो ईविल। जो कहते हैं सर्वव्यापी है, तुम कान बन्द करो। मेरे सिवाय और कोई की नहीं सुनो। भक्ति का फल देने वाला है भगवान। सभी भक्तिमार्ग में हैं ना। ज्ञानमार्ग है नहीं। जो भी शास्त्र आदि हैं सब भक्ति के हैं। भजन आदि करना सभी भक्ति। ज्ञान में भजन आदि होती नहीं। आवाज़ नहीं होता। तुम जानते ..... हमको आवाज़ परे वापस जाना है। बाप कहते हैं मीठे बच्चों को कब भी मुख से हे भगवान भी न कहना है। यह भी ईविल हो गया। मुख से कुछ भी बोलने की दरकार नहीं। कलियुग के अंत तक भक्तिमार्ग चलता है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। जबकि बाप आकर ज्ञान सु उत्तम बनाते हैं। भक्ति से मध्यम कनिष्ट बनते हैं। अभी भक्ति का ..... मनुष्य मत न सुनो। एक ही ईश्वर की मत पर चलो। जो ईश्वर कहे वह राइट है। जो मनुष्य कहे वह रांग है। बाप खुद भी मनुष्य तन में आकर समझाते हैं। यह बाईबल, कुरान, गीता वशिष्ट, महाभारत आदि सभी दुर्गति में ले जाने वाले हैं। तुम कितने बेसमझ बन गये हो। समझदार से बेसमझ बने हो। तुम गोल्डेन एज में थे, अभी आयरन एज में हो। वहां का जो होगा उनको यह बातें बहुत अच्छी लगेंगी। यहां वाले को मीठी लगेंगी। यह बाबा भी खुद गीता आदि पढ़ते थे। बाप मिला तो गीता फेंक दी। समझा यह तो ईविल चीज़ें हैं। गुरू भी कितने थे। बाप ने कहा यह सभी भक्तिमार्ग के हैं। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है। बाकी सभी हैं भक्ति। एक भी ज्ञान नहीं। ज्ञान जब मेरे से सुने तब ही ज्ञानी कहा जाये। बाकी सभी हैं भक्ति। भक्ति के शास्त्र सुनने से और ही दुर्गति होती है; इसलिए मामेकं सुनो। श्रीमत ही श्रेष्ठ है। बाकी वह सभी हैं मनुष्य मत। आसुरी मत। ईश्वर की मत यह है। वह है रावण की मत। यह है भगवान की मत। भगवानुवाच तुम कितने महान भाग्यशाली हो ; इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है। अँगूठी में भी हीरे बीच में डालते हैं। माला में भी ऊपर होता है फूल। फिर मेरू। नाम भी है आदम बीबी। तुम कहेंगे मम्मा–बाबा। आदिदेव–आदिदेवी। यह है संगमयुग की। संगमयुग ही सबसे उत्तम है। जबकि इस राज्य स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण यह बनना है। पुरानी दुनियां को नई बनाने लिए बाप आते हैं। बदलनी तो ज़रूर पड़ेगी। इस दुनियां का डेक्युरेशन कितना है। यह भी तुम बच्चों के सिवाय कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष कह देते हैं। यह है सभी झूठी बातें। झूठी माया, झूठी काया , झूठा सब संसार कहा जाता ह। सच्च है ही नहीं

दुनियां। यह है झूठ–खण्ड। फिर झूठ–खण्ड को सच्च–खण्ड बनाना यह तो बाप का ही काम है। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग के जो भी वेद–शास्त्र आदि हैं इन सबको भूलो। यह तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। वह तो सिर्फ घर–वार छोड़ इस ही दुनियां में जंगल में चले जाते हैं। यह भी उन्हों के ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। घर'–बार क्यों छोड़ते हैं? नहीं। यह तो बना बनाया ड्रामा है। बाप समझाते हैं ऐसे–2 दुनियां में होता है। यह तुम बच्चों को समझाते हैं। वह धर्म ही बिल्कुल अलग है। और जो भी धर्म वाले हैं वह स्वर्ग में नहीं आ सकते। बुद्ध डिनायस्टी, क्रिश्चयन डिनायस्टी कोई भी स्वर्ग में नहीं आते। वह तो आते ही हैं पीछे। पहले–2 है डीटी डिनायस्टी। फिर इस्लामी, बौद्धि आते हैं अपना–2 धर्म स्थापन करने। बाप पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर यह डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। और तो कोई डिनायस्टी नहीं स्थापन करते। समझो बुद्ध आया। उनकी आत्मा कोई में आवेगी। आते तो गर्भ में ही हैं। छोटा बच्चा था, सो बड़ा हुआ। शिवबाबा तो छोटा–बड़ा नहीं होता है। न वह गर्भ से जन्म लेते हैं। बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया। बुद्ध धर्म तो पहले होता ही नहीं। ज़रूर यहां के कोई में प्रवेश करेंगे। गर्भ में तो ज़रूर जावेंगे। बुद्ध धर्म का एक मनुष्य ही स्थापना करेंगे। फिर उनके बच्चे और आते जावेंगे। बुद्ध को बाल–बच्चे आदि सभी थे। फिर वृद्धि होती गई। जब लाखों की अन्दाज़ में हो जाते हैं बाद में राजाई चलती है। बौद्धों का भी राज्य था ना। जापान, चीन का भी राजा था ना। बौद्धियों का बार्डर है ना। बाबा ने समझाया था कैसे इनवेड कर ज़मीन ली है। क्रिश्चयन फिर छोड़ते गये। बाउन्डरी का पता नहीं पड़ता है। फिर भाषा पर देखते हैं। तो बाप समझाते हैं यह सभी पीछे आते हैं। उनको गुरू वा प्रीसेप्टर भी नहीं कहा जाता। गुरू होता ही एक है। अपने धर्म की स्थापना करते हैं। फिर नीचे आ(ते)–जा(ते) हैं। बाप ने तो सभी को ऊपर भेज दिया। फिर मुक्तिधाम से एक–2 होकर आते हैं। जैसे तुम (भी) जीवनमुक्ति से नीचे आते हो। वैसे वह भी मुक्ति से नीचे आते हैं। उनकी महिमा काहे की? वह तो सिर्फ धर्म स्थापक हैं। बाकी उनको तो कुछ भी पता नहीं है। बुद्ध आदि भी कुछ नहीं था। ज्ञान तो प्रायःलोप हो जाता है। बाप ज्ञान देते हैं गति–सदगति के लिए। यह गर्भ में नहीं आते हैं। इसमें बैठे हैं। इनको दूसरा कोई नाम नहीं। औरों के तो शरीर के नाम हैं। यह तो हैं ही परमपिता। वही ज्ञान का सागर है। यह ज्ञान पहले–2 भारतवासियों के लिए ही है। उन्हों को ही भक्ति का फल मिलना है। दूसरे धर्म वालों को तो फल मिलना ही नहीं है। भक्ति तुम ही शुरू करते हो। तुमको ही फल देता हूं। बाकी तो सभी हैं बायप्लाट। वह कोई 84 जन्म भी नहीं लेते हैं। तो बाप बच्चों को समझाते हैं अभी तुमको कोई भी शास्त्र आदि पढ़ने की दरकार नहीं है। भक्तिमार्ग में उनको ही याद करते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। जैसे जंगली जनावर बिल्कुल ही मूर्ख बुद्धि हैं। कह देते परमात्मा ठिक्कर–भित्तर सबमें है। बराह अवतार, परशुराम अवतार। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग तुम कितने मैड हिंसक बन जाते हो। तुम मनुष्य होते हुये भी कर्तव्य ऐसे करते हो जनावर से भी बदतर। बातें ऐसी बनाते हो जो अपनी ही निन्दा करते हो। राम की सीता चुराई गई। पादरी लोग ऐसे–2 भाषण करते थे क्या तुम हिन्दुओं का राम भगवान, उनकी सीता भगवती चुराई गई। भगवान में इतनी ताकत भी नहीं थी। हमारे क्रिश्चयन में ऐसी बातें नहीं होतीं। श्रीकृष्ण को 108 रानियां थीं। वह तो महापतित ठहरा। तुम हिन्दुओं को(का) भगवान इतना पतित। क्राइस्ट के लिए कब निन्दा की बात नहीं सुनेंगे। ऐसे–2 लेक्चर्स सुनकर कितने क्रिश्चयन धर्म में चले जाते हैं। हिन्दुओं ने आपे ही अपन को चमाट मारी है। पुजारी बन ऐसे–2 बातें करने लगे हैं। भक्तिमार्ग के शास्त्र सुनकर खुश होते हैं। कृष्ण वैकुण्ठ का प्रिन्स, वहां फिर यह कंस, असुर आदि कहां से आवें? यह भी नॉनसेन्स है ना। बाप कहते हैं तुम्हारी पारस बुद्धि थी सो फिर नॉनसेन्स बुद्धि बने हो। शास्त्रों में कितनी निन्दा लिखी है। अभी तुम भक्तिमार्ग के शास्त्र नहीं पढ़ते हो। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। बाप तुमको समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। देह का अभिमान न हो। वहां भी समझते एक पुराना शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेंगे। दुःख की

बात ही नहीं। विकार की वहां बात ही नहीं। विकार होते ही हैं रावण राज्य में। वह है ही निर्विकारी दुनियां। तुम समझाओ तो भी मानेंगे नहीं। कल्प–2 जो मानते हैं वही पद पाते हैं। जो नहीं मानते वह पद भी नहीं पाते। बाप कहते हैं यह है ही आरफन की दुनियां। सतयुग में तो बिल्कुल पवित्र, सुख–शान्ति में रहते हैं। सभी मनोकामनाएं 21 जन्मों लिए पूरी हो जाती हैं। सतयुग में कोई भी कामना होती नहीं। अनाज आदि तो अथाह होता है। मुफ्त में सभी कुछ मिल जाता है। यह बम्बई पहले थी क्या? गांव था। देवताएं खारे ज़मीन पर नहीं रहते। मीठी नदियां जहां होती हैं वहां देवताएं थे। स्वर्ग में मनुष्य बहुत थोड़े होते हैं। मूल्य कुछ नहीं। सुदामा ने दो मुट्ठी चावल की दी। उनको महल मिल गये। बाबा ने समझाया है मनुष्य दान–पुण्य करते हैं ईश्वर अर्थ। अभी ईश्वर तो बैठा नहीं है। वह कोई भिखारी है क्या? ईश्वर तो दाता है। दान करते हैं समझते ईश्वर (से) दूसरे जन्म में बहुत मिलेगा। तुम दो मूठी देते हो, नई दुनियां में बहुत लेते हो। तुम कितनी मेहनत करते हो, खर्चा करते हो, सेन्टर बनाते हो, सभी को शिक्षा देने लिए। अपना धन खर्चा करते हो तो अपनी राजाई तुम ही लेते हो। जानते हो बाप हमको नॉलेज दे रहे हैं। बाप कहते हैं मैं ही अपना परिचय तुमको देता हूं। मेरा परिचय तो कोई को नहीं है। न मैं किसके तन में आता हूं। मैं आता ही एक बार हूं जब पतित दुनियां को चेंज करना होता है। मैं हूं ही पतित–पावन। मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है। सो भी बिल्कुल एक्युरेट टाइम पर आता हूं। तुमको थोड़े ही पता पड़ता है शिव बाबा इनमें कब आते हैं। कृष्ण की तो ति(f)थि–तारीख, मिनट, घड़ियां आदि लिखते हैं। इनका कोई मिनट आदि निकाल न सके। यह खुद भी नहीं जानते। पीछे जब नॉलेज सुनाते हैं तब ही मालूम पड़ता है। इसमें तो कट चढ़ी हुई थी। परमपिता ने प्रवेश किया तो तुमको कशिश हुई। तुम (भ)ाग कर आये। कोई की भी तुमने परवाह न की। बाप तो कहते हैं मैं तो एपस्युलिटली प्योर हूं। तुम आत्माओं पर कट चढ़ती है। अभी वह कैसे निकले? मैं तो एवर प्योर हूं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिस पर जंक चढ़ी हुई न हो। ड्रामा में सभी आत्माओं को पार्ट मिला हुआ है। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। आत्मा कितनी छोटी है। दिव्य–दृष्टि के सिवाय कोई उनको देख न सके। बाप ही आकर तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं, जिसको थर्ड आई ऑफ विज़डम कहा जाता है। आत्मा को ही ज्ञान सुनाते हैं। तुम जानते हो हम आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। भक्तिमार्ग में तो ज्ञान है आटे में लून। कोई–2 कुछ अक्षर हैं। जैसे भगवानुवाचः अक्षर राइट है ; परन्तु फिर कृष्ण कहने से रांग हो जाता है। मनमनाभव अक्षर ठीक है। अर्थ नहीं समझते। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। यह है गीता का युग। भगवान इस समय ही इस तन में आते हैं। उन्होंने फिर दिखाया है घोड़े की गाड़ी। उनमें कृष्ण बैठा है। अभी कहां भगवान का यह रथ, कहां घोड़े गाड़ी। कितनी नॉनसेन्स हैं; इसलिए फिर बाप आकर तुम बच्चों को नई दुनियां का लायक बनाते हैं। यह है नालायकों की दुनियां। नालायक को फिर बाप आकर लायक बनाते हैं। यह है बेहद के बाप का घर। बाप सभी आत्माओं को बैठ समझाते हैं। बच्चों को 21 जन्मों लिए हेल्थ–वेल्थ–हैपीनेस देते है। यह भी ड्रामा में नूँध है। अनादि–अविनाशी बना बनाया ड्रामा है। कब शुरू हुआ यह कह नहीं सकते हैं। यह चक्र फिरता ही रहता है। संगम युग का किसको भी पता नहीं है। बाप ही आकर बतलाते हैं। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुद्धि है। यह ड्रामा है ही 5000 वर्ष का। आधा में सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी, आधा में बाकी और धर्म। 2500 वर्ष उनको दिया, 2500 इनको। फिर इतना बड़ा गपोड़ा, लाखों वर्ष कह देना कितनी मूर्खता है। जब बेहद का मूर्ख बन जाते हैं तब फिर बाप आकर समझदार बनाते हैं। सभी बेसमझ हैं। अभी क्रिश्चियन का पोप आता है। क्या आकर करते हैं? हज़ारों की शादियां कराते हैं। यह तो कोस का काम कराते हैं। कोसघर बना देते हैं। काम कटारी पर चढ़ाना उनको क्या कहेंगे? पोप या कसाई? नाम कितना बड़ा है। अपने ही धर्म में एक/दो कोस कराना कितना पाप का काम है। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है और आजकल देखो हॉल बनाते हैं, मन्दिर बनाते हैं। उनमें शादियां

होती रहतीं। कोस–घर बना देते हैं। पोप की कितनी महिमा करते हैं। ज्ञान तो कुछ भी नहीं जानते। बड़े–2 दिनों पर शादियों की सीज़न होती है। छोटे–2 को भी शादियां करा देते हैं। अभी बाप अपने बच्चे से ही बातें करते हैं। दूसरों से नहीं। वह तो सुनने से ही बिगड़ते हैं। यह बहिन–भाई बनाते हैं। अरे, तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बनने से बहन–भाई बनते हो। तुम आत्माएं असल में तो भाई–भाई हो। सतयुग में भी पवित्र होते हैं। उनको कहा ही जाता है वायसलेस वर्ल्ड। तुम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हो। क्रिश्चयन लोग खुद भी समझते हैं हमको कोई प्रेर रहा है। हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे–2 बॉम्स बना रहे हैं, जो एक दुनियां तो 10 दुनियांओं को भी एक बम से खत्म करेंगे। वह फिर कहते दुनियां को ही खत्म कर देंगे। कम्पटीशन है ना। बाप कहते हैं मैं आता हूं हेवन की स्थापना करने। यह भी समझ की बात है। मनुष्य कितने बेसमझ हैं। अपने ही विनाश के लिए क्या–2 बनाते रहते हैं। अभी दुनियां में कितनी हाहाकार है। फिर जय–जयकार हो जावेगी सारी दुनियां में। यह बेहद के बाप का ही काम है। बाप कहते हैं मेरा शरीर तो है नहीं। मैं इस रथ में ही आता हूं। मेरी जयन्ति अलौकिक है। अपने टाइम पर मैं आता हूं। मैं भी ड्रामा अनुसार बांधा हुआ हूं। वह तो समझते कलियुग की आयु लाखों वर्ष है। इसको भक्तिमार्ग का ज्ञान कहा जाता है। यह है ज्ञान और विज्ञान। चक्र को जानना यह है ज्ञान। याद की यात्रा है विज्ञान। इससे ही विकर्म विनाश होंगे। अभी बाप कहते हैं ईविल बातें न सुनो। इस दुनियां को देखते हुए न देखो। बाप नई दुनि(यां) की स्थापना करते हैं जिसमें राग, पाप आदि कुछ भी नहीं होता। अकाले मृत्यु नहीं होता। ईश्वरी मत से तुम 21 जन्म लिए देवता बन जाते हो। फिर कोई गुरू आदि होता ही नहीं। गुरू हैं भक्ति दुर्गति मार्ग के। बाप कहते हैं मैं तुम्हारी सद्गति करता हूं। फिर दुर्गति में तुमको कौन ले जाते हैं? यह कलियुगी गुरू। दिखाते हैं विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला। उनके हाथ में फिर शास्त्र देते हैं। अभी विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला। उनके हाथ में फिर शास्त्र देते हैं। अभी विष्णु के नाभी से तो हो न सके। विष्णु से ब्रह्मा, ब्रह्मा से विष्णु। विष्णु से फिर 84 जन्मों के बाद ब्रह्मा–सरस्वती बनते हैं। ब्रह्मा–सरस्वती सो फिर ल.ना. बनते हैं। उनको सम्बन्ध देखो कैसा है। दुनियां इन बातों को नहीं जानती है। 84 जन्मों बाद तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर बाप आकर प्रवेश करते हैं। ब्रह्मा– सरस्वती एक जन्म में पुरुषार्थ कर ल.ना. बनते हैं। बाप कहते हैं तत त्वम। कितनी गुह्य बातें हैं। बाकी शास्त्रों में क्या है? वह है उतरती कला की। अभी तुम्हारी है चढ़ती कला। भारतवासियों की ही बात है। जो कनवर्ट हो गये हैं और धर्मों में वह निकल आवेंगे। यह है पढ़ाई। भगवानुवाचः भगवान वह है जो पुनर्जन्म नहीं लेते। मनुष्यों ने फिर गीता में नाम उनका रख दिया है, जो पूरे 84 जन्म लेती हैं। भगवान फिर 84 जन्म कैसे लेंगे? मानते ही नहीं। कहेंगे कृष्ण तो है ही है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। अभी कृष्ण कोई बैठा है क्या? जो आया सो बोल देते। मनुष्य भी मान लेते। समझते हैं भगवान ही सभी रूप धरते हैं भगवान ही लीला करते हैं। तो यह समझने की बातें हैं। भक्तिमार्ग में सभी मनुष्य मात्र का पार्ट अपना है। (पोजीशन) अपना है। नाम–रूप अपना है। सभी ईश्वर के रूप नहीं हैं। सर्वव्यापी की बात कितनी डिबेट करते हैं। बात मत पूछो। कुल्ता–बिल्ला, ठिक्कर–भित्तर में परमात्मा कह देते। बाप कहते हैं मेरी भी ग्लानी, देवताओं की भी ग्लानी करते हैं। झाड़ जड़–जड़ीभूत हो जाता है। तो फिर मैं आता हूं। जास्ती तो रह भी न सकेंगे। एक्टर्स की लिमिट है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। ओमशान्ति।